

# Vanita Gupta

Paper Works  
2000 - 2002



A sapling is nourished by water, manure and many more unknown elements subsisting in this earth. The substance of survival of all these plants and trees is in the same soil, but one bears a rose while the other an orange.

Color, paper, canvas, these tools are common for all artists, but their impact on every artist is different.

The act of painting is like the metamorphosis of a seed into a flower and to talk about this process is like a reverse journey from a flower to seed. We might reach a seed but cannot enter into it.

Questions such as, why this line is drawn here or why that particular color is applied there, is like snatching away the roundness from the ball.

A sponge does not differentiate between milk, water or sludge, it absorbs any liquid. Fluidity is the basic element of all these liquids.

I too, like a sponge want to reach that basic element in visual art. Every painting of mine is an attempt to go towards that unknown and unseen visual, I move ahead in my work not by subtracting my past but by squeezing the essence from it. In life, from life we accept all that is beautiful, ugly, good, bad, sorrow, joy, but what we finally retain out of all these, can we split it back in to these categories. Even if this 'remainder' becomes the cause of a painting, can we attribute it to any one of them?

□

Usually, we see the external visuals and not the internal ones. I want to define the distance between this two visuals, the seen and the unseen. The visible, which is in front of our eyes and the invisible, which is on the other side of the eyes. This other side has no space for an external source of light. The darkness here is self-illuminated. This darkness accentuates my sensibility of touch. The quintessence of my painting is hidden in this tactility. They are tactile visuals. One has to experience them through visual touch.

The freshness of a newly grown leaf demands to be seen by touch.

□

'Aki, tell me what is this?' asked Anshi,

'Its a curtain, 'Aki answered

'And what?'

'Its red in color.

'And?'

'And what Anshi, I don't know.'

Oh Aki, it's a fabric, which is the result of the warp and weft of innumerable threads and these threads are woven out of cotton. Cotton is the raw material here. Curtain is the cultivated form of cotton. This transformation is so fascinating that we don't even think of its origin.'

Does the origin of a painting exist only in the objective and the apparent?

□

Water is formless, but on earth it gets a form.

Sun has a form, light is formless, but light gives a form to shadow.

The steps, which ascend upwards also descend downwards, a tree grows on earth and also underneath.

I am inquisitive about this other direction.

Common and uncommon are two perspectives of a vision, one is the familiar view and there can be many more besides that, for instance;

'Balloon is in the air; is a usual, obvious view.  
Air is around the balloon / A balloon has separated air from air-  
are also two options for the same visual.

□

Tell me Aki, what does soil look like?'

'Soil! Soil is like soil, it is unlike any thing, how can it be like anything else.'

Exactly, like that soil, my paintings are not like anything, they are like themselves. Any form of simile you use to understand them, will take you away from them. Can you not look at them without any reference?'

'You know Aki, last year a report was published on the front page in the Times of India. A strange species had entered a Delhi locality. It was neither human nor animal. Its mannerism was absolutely different, very unworldly. There was chaos in the entire city; it became a challenge to science and the scientists. All the possible dictionaries were scanned but there was no mention of any such thing, even computers failed to reveal its identity. Aki, I was getting curious, this unknown creature had spread terror everywhere. My enthusiasm grew, to read further I turned over to the next page. Which read , 'Happy April fools day'.

'Aki, this was a fiction, which ended with my reading. But what if it were a fact, would we accept it in our real life. In this tangible world don't we have any space for such unknown, unseen, unrecognisable, untitled substance?'

□

How was your meet?

Okay .

What do you mean?

It was okay Aki, I don't know why longevity is a major issue today, can we measure a life of the relationship before living it, how can we be so secure, will there be any thrill in such a living. They were very expressive, oh your work is so fragile, sensitive, very interesting, but then he said this hand made paper works which you create on your own, what will happen to them after 50 years? And then he uttered a poem, I remember its first two lines, 'this is paper, it will burn in fire and decay in water'.

Aki I modestly replied to him, 'everything has its own age, every life is accompanied by death'.

On one hand they were praising the fragility of my work and then same fragility became the subject of criticism in their eyes.

Vulnerability is the essence of the flower you cannot separate it from the flower otherwise, we will have to add plastic in the manure for these plants and trees.

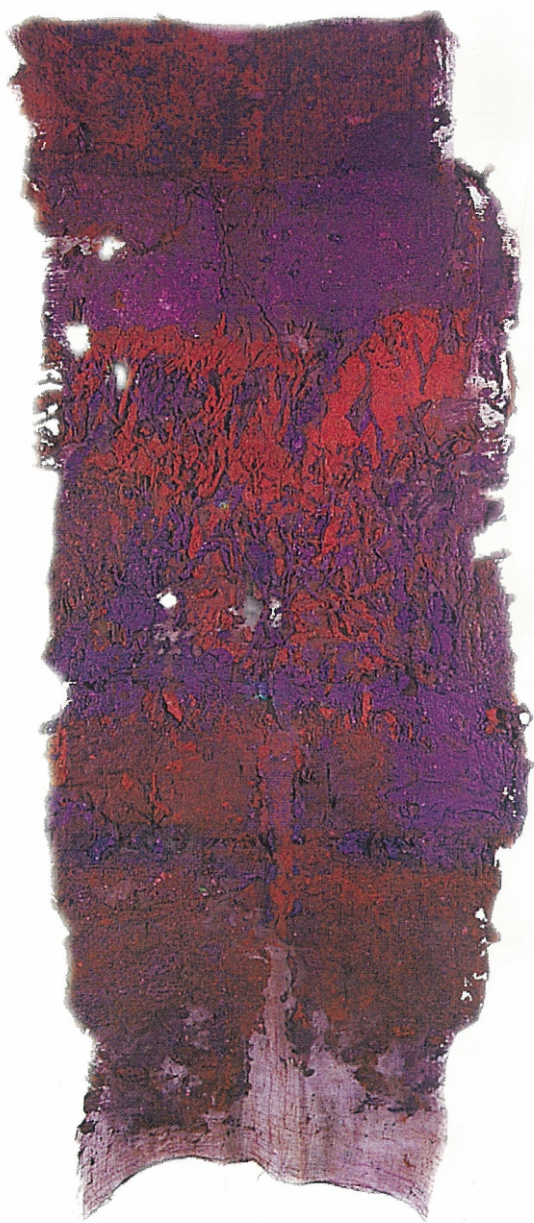
*These distinct passages of dialogue between the two characters 'Anshi and Aki' are the excerpts from my forthcoming novel , "ANSHI".*

*Translated from original Hindi by, Vanita Gupta*





64" X 22" - Untitled, 2002  
Paper Pulp, Colour Dyes & Gauze



67" X 27" - Untitled, 2002  
Paper Pulp, Colour Dyes & Gauze



66" X 24" - Untitled, 2002  
Paper Pulp, Colour Dyes & Gauze





68" X 20" - Untitled, 2002  
Paper Pulp, Colour Dyes & Gauze





26" X 24" - Untitled, 2001  
Paper Pulp, Colour Dyes & Gauze



66" X 25" - Untitled, 2002  
Paper Pulp, Colour Dyes & Gauze



53" X 24" - Untitled, 2002  
Paper Pulp, Colour Dyes & Gauze





36" X 33" - Untitled, 2000  
Paper Pulp, Colour Dyes & Gauze



पौधा जमीन से पानी, खाद, न जाने और कौनसे तत्त्व शोषकर बढ़ता है। इन सभी पेड़, पौधों के जीने का सामान इसी मिट्टी में है फिर एक गुलाब देता है और दूसरा संतरा।

रंग, पेपर कैनवस इत्यादि सामान तो सभी के एक से हैं, पर इनका प्रभाव हर कलाकार पर अलग होता है।

पेंटिंग करने की क्रिया बीज से शुरू होकर फूल बनने तक की है, पर उसके बारे में कहना याने फिर फूल से बीज के पास जाने जैसा है, हम बीज तक जा सकते हैं पर बीज के भीतर नहीं ॥

ये लकीर यहाँ क्यों है, या फलाना रंग वहाँ क्यों लगाया है, इस तरह से टटोलना तो, गेंद से उसका गोलाकार छीनने जैसा होगा ॥

जैसे स्पंज दूध, पानी या कीचड़ में फरक नहीं करता, सब सोख लेता हैं। उसके लिए ये सभी द्रव्य हैं, तरलता ही इन सभी द्रव्यों का तत्त्व है।

मुझे भी स्पंज की तरह दृक्-कला में मूल तत्त्व की ओर जाना है। मेरा हर चित्र एक प्रयास है उस अनदेखे दृश्य की ओर जाने का। मैं अतीत को छोड़कर नहीं, निचोड़कर अपने नये चित्रों की ओर बढ़ती आयी हूँ। जीवन में, जीवन से, हम सुंदर, असुंदर, बुरा, अच्छा, दुःख, सुख, सब ले लेते हैं। पर जो हममें रह जाता है क्या हम उसे फिर से इन कैटेगरीज में बाँट सकते हैं ?

चित्रकला की उपज इस 'बचे' हुए तत्त्व के कारन भी हुई तो क्या हम इसे किसी एक के सुपूर्द कर सकते हैं ?

□

अक्सर हम आँख के बाहर का दृश्य देखते हैं पर उसके भीतर का नहीं। मुझे इन दोनों दृश्यों के बीच का फासला तय करना है, एक जो नजर आ रहा है और दूसरा जो नजर नहीं आता। इस दूसरी जगह बाहर की रोशनी की कोई गुंजाईश नहीं, यहाँ के अंधेरे का अपना एक उजाला है, ये अंधेरा मेरी स्पर्श संवेदना को छेड़ता है। मेरे चित्रों की मार्मिकता स्पर्श में छुपी है। वे टेक्टाईल् विजुअल्स हैं। इन्हें आँखों से छूकर देखना होगा।

तुमने पेड़ पे उगे उस ताजे नये पत्ते पर गौर किया है, उसे छूकर देखने की इच्छा होती है।

□

'अकि, बताओ तो, ये क्या है ?' अंशी ने पूछा,

'परदा है', अकि ने कहा

'और ?'

'ये लाल रंग का है'

'और ?'

'और क्या अंशी, मुझे नहीं पता ?'

'अरे अकि ये एक कपड़ा है, जो अनगिनत धागोंसे बना है और ये धागे रुई से बुने हैं, रुई इस परदे का मूल स्रोत है, परदा इस रुई का रूपांतर है। ये कार्यांतर इतना मोहक है कि हम उसके मूल रूप के बारे में सोचते भी नहीं'।

चित्र की उपज क्या नजर आनेवाली वस्तु और दृश्यों में ही है ?

□

पानी निराकार है, पर धरती पर वो आकार बन जाता है।

सूर्य का आकार है, धूप का नहीं, पर धूप छाँव को आकार देती है ॥

जो सीढ़ियाँ उपर जाती हैं, वही उपर से नीचे भी आती हैं। पेड़ जमीन के उपर बढ़ता है और जमीन के नीचे की तरफ भी, मुझे उस दूसरी दिशा में उत्सुक किया है।

साधारण और असाधारण ये दृष्टि के दो पहलू हैं। जो नजर आ रहा है वह एक पहलू है, पर उसके अलावा भी और कई पहलू हो सकते हैं, जो आसानी से नजर नहीं आते।

जैसे, 'ये गुब्बारा हवा में है', या फिर, 'इस गुब्बारे के ईर्द गीर्द हवा है', या फिर, 'एक गुब्बारे ने हवा से हवा को अलग कर दिया'।

□

बताओ अकि मिट्टी किसके जैसी है?

मिट्टी ! मिट्टी तो मिट्टी है, ये किसी के जैसी कैसे हो सकती है ? अकि ने जवाब दिया।

अंशी ने कहा, ठिक उसी तरह, मेरे चित्र किसी के जैसे नहीं। तुम इन्हें समझने के लिए जितनी उपमाएँ दोगी उतनी ही उनसे दूर होती जाओगी। क्या तुम इन्हें बिना किसी संदर्भ के देख सकती हो ?

यु नो अकि, पिछले साल टाइम्स ऑफ इंडिया में खबर छपी थी, फ्रंट पेज पर थी, दिल्ली में किसी मोहल्ले के एक घर में, एक ऐसा स्पीसीस आ गया जो ना तो इन्सान जैसा था ना जानवर जैसा। उसकी हरकतें बिलकुल जुदा, अद्भुत थीं। सारे शहर में हल्ला मच गया, बड़े बड़े वैज्ञानिकों के लिए ये एक चैलेंज बन गया। सारे शद्वकोश फरोल दिये गये पर ऐसी किसी चीज़ का कहीं उल्लेख नहीं था, कम्प्युटर भी हार गया। अकि, मेरी उत्सुक्ता बढ़ती जा रही थी। एक अनजानी चीज़ ने इतनी दहशत फैला दी थी। मेरी दिलचस्पी बढ़ रही थी, आगे पढ़ने के लिए मैंने अखबार का पन्ना पल्टा, तो लिखा था, "हैंपी एप्रिल फुल्स डे," अकि, यह एक कहानी थी जो पढ़ते ही खत्म हो गई, पर अगर यह सच होता तो क्या हम इसे जीवन में अपना सकते ?

क्या हमारे वास्तविक जीवन में अनहोनी, अनजानी, अनदेखी, अनामी चीज़ों की कोई जगह नहीं ?

□

'कैसी थी मीटींग अंशी' ? अकि ने पूछा।

'ओके, 'अंशी ने जवाब दिया '

याने ?'

'ठीक थी अकि, समझ में नहीं आता कि लॉजिक्सी इतना एहम् प्रश्न क्यों है, क्या किसी रिश्ते को जीने से पहले हम उसकी उम्र नाप सकते हैं ? हम इतने सुरक्षित होकर क्यों जीना चाहते हैं, फिर जीवन में क्या लोच रह जाएगा', 'दे वर वेरी एक्स्प्रेसीव, 'ओह, योर वर्क इज सो फ्रजाइल, सेंसेटीव, बहोत इंटरस्टिंग वगैरा वगैरा, '

पर फिर उन्होंने कहा, 'ये हाथ कागज के चित्र जो तुम खुद बनाती हो, आज से ५० साल बाद इनका क्या होगा ? और फिर एक कविता सुनाई, जिसकी पहली दो पंक्तियाँ मुझे याद हैं ' ये कागज है, आग से जल जाएगा, पानी में गल जाएगा...'

अकि, इसपर मैंने नम्रता से कह दिया, 'हर चीज़ अपने साथ अपनी उम्र लेकर आयी है, हर जीवन अपने साथ मृत्यु लाता है,

एक तरफ वो मेरे काम की फ्रजीलीटी की तारीफ कर रहे थे, और फिर वही फ्रजीलीटी उनकी दृष्टि से समीक्षा का विषय बन गयी।

फूल को उसकी नाजुकता से अलग नहीं किया जा सकता। फिर तो, 'फूल पौधों की खाद में भी प्लास्टिक मिलाना होगा ' ॥

ये अनुच्छेद, मेरी आनेवली उपन्यास 'अंशी' में, 'अकि और अंशी' के बीच हुए संवाद के कुछ हीस्से हैं।

वनिता गुप्ता

## Vanita Gupta

G.D. Fine Arts in 1992 , L S Raheja School of Art, Mumbai,  
since then I have been participating in various exhibitions

1991 Rashtriya Kala Mela, Mumbai

1992 City Art Utsav, Mumbai

1993 Monsoon Art Show, Jehangir Art Gallery, Mumbai

1996-2000 Miniature Format Show, Sanstache Gallery

1997 50 Years of Art in Bombay, N.G.M.A., Mumbai

1998 Essays in time at Nehru Centre, Mumbai

1999 Art Jumbori at Lakeeren Art Gallery, Mumbai

2000 Ideas and Images", at N.G.M.A., Mumbai

2001 West Zone at Tao Art Gallery, Mumbai

2001 National Exhibition of Art Lalit Kala Academy, Ahmedabad

2001 Kala Ghoda Festival at N.G.M.A., Mumbai

2002 Women's Show "Shakti" curated by Gallery Beyond, Mumbai

2002 Group Show at Indigo, curated by Gallery Beyond, Mumbai

2002 New Paradigms at Habitat Centre, Delhi

In 1995 invited to participate in Artist Camp at Lonavala  
by Artist Center, co-sponsored by LKA

I have had Solo Exhibitions at Jehangir Art Gallery, Mumbai  
in 1994, 1998 & 2002.

Works in Private Collections in India & abroad.

### Studio

Vanita Gupta  
A2/602 Dheeraj Valley,  
Near Ciba Giegy, Goregoan (E),  
Mumbai - 400063. India.  
Ph: +91 22 8405456 / 8737142  
email: vanitagupta@vsnl.net

### Acknowledgements

Vibhu Kapoor  
Prabhakar Kolte  
Ranjit Hoskote  
Jai Prakash Sawant





## Gallery Beyond

For enquiries contact 022-5782883 or  
e-mail: [contact@gallerybeyond.com](mailto:contact@gallerybeyond.com)